खाटू के मनमौजी श्यामजी

सीकर जिले में रींगस कस्बे से 16 किलोमीटर दूरस्थ सड़क मार्ग से जुड़े खाटू श्यामजी ग्राम में चितचोर श्याम बाबा को खोजना अब कठिन नहीं रह गया। इस आध्यात्मिक उपनिवेश में देश के विस्तीर्ण कर्मक्षेत्र के दर्शनार्थी आते हैं और श्याम बाबा के दर्शन करके अपनी आस्था यात्रा का पूर्ण अनुभव करते हैं, यह सोचकर कि बहुत खोजा तो कहीं नहीं मिला और मिला तो ग्राम्यांचल में हर दिन एक मेला लगाए, सुदुर क्षेत्रों से अपने भक्तजनों को बुलाए। बड़ा मनमौजी है श्याम बाबा। दिन में कई–कई रंग बदलता है और फिर वहीं श्यामरंग। चाहे उसे मनवांछित फल दे दे और दया करने आए तो जिन्दगी दे दे, श्याम बाबा के क्या कहने।

कहते हैं जिन्हें कोई आसरा नही मिला ओर वे जन वैराग्य लिए यहां आए तो श्याम बाबा ने उन्हें वह सब दे दिया जितना वे सोच भी नहीं पाए थे। तभी तो दर्शनार्थी कहते हैं–"कौन जाए काशी, कौन जाए काबा, खाटू में मिलते है सर्वत्र श्याम बाबा।" श्याम बाबा का यह स्थान एक तीर्थ है और प्राचीनतम का प्रतीक गांव है जो महाभारत कालीन संदर्भों से जुड़ा है। मार्ग में खेतों के बीच से गुजरती हुई बस से देखा तो कही हरीतिमा की मखमली चादर बिछी थी, कही ढाणीनुमा गबरीले मकान थे तो कहीं खेजड़े, आकड़े और फोगले के वृक्ष पता पूछ रहे थे। बस के यात्री अपने में खोये हुए खाटू श्यामजी स्थान कही परिकल्पना में डूबे थे और आँखों के सामने ग्राम्य परिवेश की नयनाभिराम छवियां आ जा रही थीं। सामने अरावली की श्रृंखलाएं आमंत्रित करती अपने नीले हाथों से अभिवादन करने लगीं और पहाड़ से पहले ही आ गया खाटू श्याम जी। कही प्राचीन छतरियां, एक छोटा सा बाजार और यात्रियों दर्शनार्थियों की बसें, कारें, और जोंगे देखकर लगा ग्राम्य क्षेत्र जरुर किन्तु इसे सभी स्थलों के दर्शनार्थियों ओर विभिन्न संस्कृतियों के प्रतिनिधियों ने एक मिनी भारत बना दिया है। यहाँ बनियों ने श्याम कुण्ड का, मुसलमानों ने श्याम बगीची का और राजपूतों ने श्याम मन्दिर का जो रख रखाव किया है वह भी अपनी एक विशेषता है। खाटू का मन्दिर वि.सं. 1777 में निर्मित हुआ।

पहले यह गाँव जोधपुर के अर्न्तगत था इसके विकास विस्तार में जन सहयोग सर्वोपरि रहे हैं। कार्तिक में यहाँ छोटा और फाल्गुन में बड़ा मेला लगता है जिनमें क्रमशः आठ हजार और तीन लाख दर्शनार्थी भाग लेते हैं यों 50–60 यात्री तो यहाँ प्रतिदिन आते हैं। ग्यारस को यह संख्या 500 तक पहुंच जाती है ओर कोई 8 हजार की आबादी वाले इस ग्राम में श्याम बाबा की गंध सर्वत्र परिव्याप्त है। यहाँ यात्रियों के लिए बर्तनादि की पूर्ण व्यवस्था है और वर्तमान में धर्मशालाएं हैं, श्री श्याम हरियाणा धर्मशाला, और गढ़वाली धर्मशाली आदि। पंचायती धर्मशाला में 60 कमरें है और 30 कमरे और बनवाएं जाने की योजना है। इस धर्मशाला पर 6 लाख रुपए व्यय किए जा चुके हैं। कोई 20 लाख रुपए के व्यय से यह बन पाएगी।

श्यामजी से श्याम बाबा की प्रतिमा निकली थी और इसके पीछे किवंदती यह है कि श्याम बाबा बर्बरीक के सिर के रूप में खाटू की भूमि मं समाए रहे। वे कुण्ड के पास खड़ी एक गाय का दूध देवकला से खींचकर पीने लगे। जब गाय के मालिक को पता

लगा तो उसने गाय का पीछा किया, कुण्ड तक आया तो उसने देखा दूध की धार जमीन में जा रही है। उसने जमीन खुदवायी तो आवाज आयी यहाँ श्यामजी प्रकट होंगे और बाद में श्यामजी की प्रतिमा उसे प्राप्त हुई।

भागवत पुराण के अनुसार यह खाटू नामक स्थान कभी खटाक नगरी थी और यहां के राजा को स्पप्न में श्यामजी ने दर्शन देकर कहा कि तुम ग्राम में मेरा मन्दिर बनाकर उस गाय के मालिक से मेरी प्रतिमा लेकर स्थापित करो, तुम यशभोगी बनोगे। राजा ने ऐसा ही किया और तब से यहां मन्दिर में श्याम बाबा की प्रतिमा स्थापित है।

महाभारत काल में भीम पुत्र वीर घटोत्कच के बाद उसके पुत्र बर्बरीक के वर्णित किया गया और उसका यहां प्रकट होना इतिहास सिद्ध है। इस कुण्ड के स्नाान का इसीलिए विशेष महत्व रहा है। यहां दो कुण्ड हैं, एक प्राचीन जिसका हाल जीर्णोद्धार हुआ है और एक नवीन जिसे जनाने कुण्ड के रुप में बनवाया जा रहा है। नए कुण्ड पर 20 लाख रुपए का अनुमान है। कुण्ड के ऊपर बरामदों में चारों और गीता के 18 अध्यायों से सम्बंधित चित्र हैं जो कृष्णकालीन पौराणिकता से दर्शनार्थियों को बांधते हैं।

श्याम बगीची के पुष्प श्याम बाबा के श्रंगार के लिए लाए जाते हैं। मनोहारी ओर सुन्दर इस उद्यान की एक ओर रघुनाथजी का मन्दिर भी है। भक्तजनों के स्नानादि के लिए यह बगीची अच्छा स्थान है।

श्याम पुजारी

साभार–डमरु की आवाज सूनो ग्रन्थ स्मारिका 2004